(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 1] षष्टम् विधान सभा के प्रथम सत्र का प्रथम दिवस [संख्या 1

सोमवार

18 जुलाई, 1977

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(मेजर श्री फतहसिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

सदन की मेज पर रखे गये पत्र

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रकाशित पुस्तक

श्री अध्यक्ष : सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्र ! सचिव।

श्री सचिव : महोदय !

मैं, भारत निर्वाचन आयोग की ओर से माननीय अध्यक्ष को भेंट की गई पुस्तिक, जिसमें 1977 के आम चुनाव में राजस्थान विधान सभा के लिये चुने गये सदस्यों के नाम दिये गये हैं, की प्रति सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : सचिव द्वारा पढ़ी जाने वाली अधिसूचनाएं ! सचिव।

अधिसूचनाएं

श्री सचिव : महोदय !

मेजर फतहसिंह की अस्थाई अध्यक्ष पद पर नियुक्ति उनके समक्ष विधान सभा के सदस्यों द्वारा शपथ लेने अथवा प्रतिज्ञान करने तथा उनके द्वारा दिनांक 17 जुलाई, 1977 को प्रातः 11.00 बजे राज्यपाल महोदय के सम्मुख शपथ लेने सम्बन्धी अधिसूचनायें पढ़ कर सुनाता हूं जो इस प्रकार हैं :—

(1) अधिसूचना संख्या एफ. 1 (1) संसद/77, दिनांक 13 जुलाई, 1977-
" भारत के संविधान के अनुच्छेद 180 के खण्ड (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में, राजस्थान के राज्यपाल मेजर फतहसिंह, जो राजस्थान

Page No 2

(2)

(श्री सचिव)

विधान सभा के सदस्य हैं, को 13 जुलाई, 1977 से प्रारम्भ होने वाले छठी राजस्थान विधान सभा के सत्र के दौरान, उस समय तक, जब तक कि अध्यक्ष का यथाविधि निर्वाचन न हो जाय, उक्त विधान सभा के अध्यक्ष पद के कर्त्तव्यों का निष्पादन करने के लिये नियुक्त करते हैं।

राज्यपाल के आदेश से,
रणवीर सहाय वर्मा,
शासन सचिव।"

(2) अधिसूचना संख्या एफ. 1 (1) सदन/77, दिनांक 13 जुलाई, 1977—

"भारत के संविधान के अनुच्छेद 188 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में राजस्थान के राज्यपाल, मेजर फतहसिंह को उस व्यक्ति के रूप में नियुक्त करते हैं जिसके समक्ष कि छठी राजस्थान विधान सभा के सदस्य शपथ लेंगे या प्रतिज्ञान करेंगे तथा उस पर हस्ताक्षर करेंगे।

रणवीर सहाय वर्मा,
शासन सचिव।"

(3) अधिसूचना संख्या एफ. 4 (1) सदन/वि. स./77, दिनांक 17 जुलाई, 77—

"मेजर फतहसिंह, सदस्य, विधान सभा ने भारत के संविधान की तृतीय अनुसूची में दिए गए प्रपत्र 7 के अनुसार दिनांक 17 जुलाई, 1977 को प्रातः 11.00 बजे राज्यपाल महोदय के समक्ष शपथ ग्रहण कर ली है।

गोपाल कृष्ण शर्मा,
सचिव।"

अध्यक्षीय घोषणा

कांग्रेस दल को विधान सभा में विरोधी दल के रूप में मान्यता

श्री अध्यक्ष : अध्यक्षीय घोषणा।

मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि राजस्थान विधान सभा कांग्रेस दल को विधान सभा में विरोधी दल के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। विधान सभा कांग्रेस दल के नेता होने के नाते श्री परसराम मदेरणा को विरोधी दल का नेता घोषित किया जाता है।

(3)

शपथ एवं प्रतिज्ञान

नवनिर्वाचित सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण अथवा प्रतिज्ञान

श्री दाऊदयाल जोशी (तोगोद) : इससे पहले मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। टेबल पर जो पत्र पड़ा है उसके लिये निवेदन करता हूं कि वह इस सदन से सम्बन्धित नहीं है, निमन्त्रण पत्र है.....

श्री नवनीत कुमार (नाथद्वारा) : जब आपने शपथ ही नहीं ली तो बोल कैसे सकते हैं ? बिना शपथ लिये बोलने लग गये आप।

एक माननीय सदस्य : यही बात आप पर भी लागू होती है।

एक माननीय सदस्य : You have no right.

[सदस्यों ने उनके नाम के समक्ष अंकित भाषा में शपथ ग्रहण की/प्रतिज्ञान किया]

सदस्य का नाम	शपथ/प्रतिज्ञान	भाषा जिसमें शपथ ग्रहण की प्रतिज्ञान किया
1	2	3
1. श्री आदित्येन्द्र	शपथ	(हिन्दी)
2. श्री केदारनाथ	शपथ	(हिन्दी)
3. श्री सम्पतराम	शपथ	(हिन्दी)
4. श्री त्रिलोकचन्द जैन	शपथ	(हिन्दी)
5. श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी	शपथ	(हिन्दी)
6. श्रीमती विद्या पाठक	शपथ	(हिन्दी)
7. श्री महबूब अली	शपथ	(हिन्दी)
8 श्री कैलाशचन्द	शपथ	(हिन्दी)
9. श्री विज्ञान मोदी	शपथ	(हिन्दी)
10. श्री परसराम मदेरणा	शपथ	(हिन्दी)
11 श्री अचलाराम	शपथ	(हिन्दी)
12. श्री अमीतसिंह	शपथ	(हिन्दी)
13. श्री अब्दुल अजीज	शपथ	(हिन्दी)
14 श्री अब्दुल हादी	शपथ	(उर्दू)
(श्री अमृतलाल अनुपस्थित)		
15 श्री अयूब खां	शपथ	(हिन्दी)
16. श्री अलसाराम	शपथ	(हिन्दी)
17. श्री असलम अली खान	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)

(4)

1	2	3	4
18.	श्री इन्दरसिंह	शपथ	(हिन्दी)
19.	श्री ईश्वर चन्द	शपथ	(हिन्दी)
20.	श्री उगम राज	शपथ	(हिन्दी)
21.	श्रीमती उजला अरोड़ा	शपथ	(हिन्दी)

22. श्री उमरावसिंह ढाबरिया (अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई) (हिन्दी)

[श्री उमरावसिंह ढाबरिया ने शब्द "भारत के संविधान के प्रति" के पश्चात् शब्द XXX और जोड़े]

श्री अध्यक्ष : इस शपथ में जो XXX शब्द कहे गए हैं, उनको एक्सपंज कर दिया जाए। इस पर लोक सभा में बहस हुई है। यहां पर चर्चा की आवश्यकता नहीं है। जो विधान है, उसका हम पालन कर रहे हैं।

श्री मथुरादास माथुर (डीडवाना) : बिना माननीय सदस्य की मन्जूरी के आप ऐसा नहीं कर पायेंगे क्योंकि जब उन्होंने शपथ लेते हुए साफ-साफ शब्द कहे हैं तो आप उनको एक्सपंज कैसे कर सकते हैं ? अगर करेंगे तो उनकी शपथ को पूरा नहीं माना जाएगा।

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय को अधिकार है कि शब्दों को एक्सपंज कर सकते हैं।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : माननीय सदस्य अच्छी तरह से जानते हैं कि शपथ ग्रहण का जो प्रारूप है, उसी प्रकार की भाषा का प्रयोग यहां किया जा रहा है। उस भाषा के अतिरिक्त यदि किन्हीं शब्दों का प्रयोग किया गया और यदि वे शब्द माननीय अध्यक्ष द्वारा एक्सपंज किए गए तो वह शपथ प्रारूप के अनुसार ही ली हुई समझी जानी चाहिए।

श्री रामनारायण चौधरी (मण्डावर) : आपको याद होगा कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल में ऐसे ही शपथ ली, किसी मंत्री ने इसी भाषा और इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया और बाद में जब····

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। आसन पैरों पर है।

XXX अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार शब्द निकाले गये।

(श्री अध्यक्ष)

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि शपथ, जो भी हमारा संविधान है, उसके प्रति ले रहे हैं और संविधान वही है जिसका इस शपथ में जिक्र किया गया है। माननीय सदस्यों की भावनायें कुछ और हो सकती हैं लेकिन जब तक संविधान में आपकी भावनाओं के अनुकूल संशोधन नहीं हो जाता तब तक संविधान वही माना जाएगा जो इस वक्त विद्यमान है। इसलिए इस विषय पर कोई चर्चा न की जाए।

आगे चलें।

1	2	3
23. श्री उमराव सिंह (महुआ)	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : (श्री ऊदा राम हटीला द्वारा शपथ लेते हुए अटकने पर) आप ठहरिए! मैं जो बोलू, उसके साथ आप बोलेंगे।

24. श्री ऊदा राम हटीला	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)

श्री रामसिंह विश्नोई : क्या बजाते हो।

(श्री ओम प्रकाश : अनुपस्थित)

25. श्री ओंकार लाल चौहान	शपथ	(हिन्दी)
26. श्री कमलेन्द्रसिंह	शपथ	(हिन्दी)
27. श्री करतारसिंह	शपथ	(हिन्दी)
28. श्री कल्याणसिंह	शपथ	(हिन्दी)
29. श्री कानसिंह	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : (श्री कालू से) मैं बोलता हूं।

30. श्री कालू	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)
31. श्री काशी नाथ	शपथ	(हिन्दी)
32. श्री किशन सिंह	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : (श्री कुंजी लाल द्वारा शपथ लेते हुए अटकने पर) बोलता हूं आप मेरे पीछे-पीछे बोलें।

33. श्री कुन्जी लाल	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)

Page No 6

श्री अध्यक्ष : मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि जो माननीय सदस्य पढ़ नहीं सकते हों वे हमें कह दें ताकि समय की बचत हो सके।

1	2	3
34. श्री कौशल किशोर जैन	शपथ	(हिन्दी)
35. श्री खंगारसिंह	शपथ	(हिन्दी)
36. श्री खेतसिंह	शपथ	(हिन्दी)
37. श्री गंगाराम चौधरी	शपथ	(हिन्दी)
38. डाक्टर श्री गंगा सहाय	शपथ	(हिन्दी)

एक माननीय सदस्य : डाक्टर भी साथ है।

एक माननीय सदस्य : चालीस मरीज भी साथ में लाये हैं।

एक माननीय सदस्य : यह तो मालूम पड़ जायेगा।

39. श्री गणेशलाल	शपथ	(हिन्दी)
40. श्री गम्भीरलाल	शपथ	(हिन्दी)
41. श्री गिरधारीलाल भार्गव	शपथ	(हिन्दी)
42. श्रीमती गुणवन्त कुमारी	शपथ	(हिन्दी)
43. श्री गुरुशरण छाबड़ा	शपथ	(हिन्दी)
44. श्री गुल मोहम्मद	शपथ	(हिन्दी)
45. श्री गुलाब चन्द	शपथ	(हिन्दी)
46. श्री गोपाल	शपथ	(हिन्दी)
47. श्री गोपालसिंह (आहोर)	शपथ	(हिन्दी)
48. श्री गोपालसिंह (खण्डेला)	शपथ	(हिन्दी)
49. श्री गोरधन	शपथ	(हिन्दी)
50. श्री गोविन्द सहाय	शपथ	(हिन्दी)
51. श्री गोविन्द सिंह	शपथ	(हिन्दी)
52. श्री चिरंजीलाल	शपथ	(हिन्दी)
53. श्री चुन्नीलाल	शपथ	(हिन्दी)
54. श्री चेनाराम	शपथ	(हिन्दी)
55. श्री जगतार सिंह	शपथ	(पंजाबी)
56. श्री जगदीशचन्द्र	शपथ	(हिन्दी)
57. श्री जगदीशसिंह	शपथ	(हिन्दी)
58. श्री जयकृष्ण	शपथ	(हिन्दी)
59. श्री जयनारायण सालोदिया	शपथ	(हिन्दी)

Page No 7

(7)

1	2	3	4
60.	श्री जयनारायण (मादुलपुर)	शपथ	(हिन्दी)
61.	श्री जियिंग	शपथ	(हिन्दी)
62.	श्री जीतमल	शपथ	(हिन्दी)
63.	श्री जेठमल	शपथ	(हिन्दी)
64.	श्री टीकमचन्द कान्त	शपथ	(हिन्दी)
65.	श्री डूंगर राम	शपथ	(हिन्दी)
66.	श्री ताराचन्द	शपथ	(हिन्दी)
67.	श्री दाऊदयाल जोशी	शपथ	(संस्कृत)

(शपथ के अन्त में कहा : सर्वे भवन्ति सुखिना, सर्वे सन्तु निरामय)

68.	श्री दिग्विजय सिंह	शपथ	(हिन्दी)
69.	श्री दूलाराम	शपथ	(हिन्दी)
70.	श्री नरपत सिंह	शपथ	(हिन्दी)
71.	श्री नन्दलाल	शपथ	(हिन्दी)
72.	श्री नरपतराम बरवड़	शपथ	(हिन्दी)
73	श्री नरेन्द्रपाल सिंह	शपथ	(हिन्दी)
74.	श्री नवनीतकुमार पालीवाल	शपथ	(हिन्दी)
75.	श्री नवरंग सिंह	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
76.	श्री नवलराय बच्चानी	शपथ	(सिन्धी)
77.	श्री नाथूराम	शपथ	(हिन्दी)
78.	श्री नाथूलाल	शपथ	(हिन्दी)
79.	श्रीमती नारंगी देवी	शपथ	(हिन्दी)
80	श्री नारायण	शपथ	(हिन्दी)
81.	श्री नारायण सिंह	शपथ	(हिन्दी)
82.	श्री निर्मल कुमार	शपथ	(हिन्दी)
83	श्री नूरा	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
84.	श्री पदम सिंह	शपथ	(हिन्दी)
85.	श्री परसराम	शपथ	(हिन्दी)
86	श्री पुरुषोत्तम	शपथ	(हिन्दी)
87.	सुश्री पुष्पा	शपथ	(हिन्दी)
88	श्री प्रद्युम्न सिंह	शपथ	(हिन्दी)

श्री प्रेम सिंह : मैं उर्दू में बोलूंगा ।

Page No 8

(8)

श्री अध्यक्ष : उर्दू में ले लें।

श्री प्रेमसिंह : आप बोलें...

(अध्यक्ष महोदय ने असमर्थता प्रकट की)

1	2	3	4
89.	श्री प्रेम सिंह	शपथ	(हिन्दी)
90.	श्री बंशी लाल सारस्वत	शपथ	(हिन्दी)
91.	श्री बजरंग लाल शर्मा	शपथ	(हिन्दी)
92	श्री बहादुर सिंह (रानपुर)	शपथ	(हिन्दी)
93.	श्री बहादुर सिंह (नोहर)	शपथ	(हिन्दी)
94.	श्री बाल चन्द आर्य	शपथ	(हिन्दी)
95.	श्री बिरदमल सिंघवी	शपथ	(हिन्दी)
96.	श्री भंवर लाल एरन	शपथ	(हिन्दी)
97.	श्री भंवरलाल शर्मा	शपथ	(संस्कृत)
98.	श्री भवानी सिंह	शपथ	(हिन्दी)
99.	श्री भूरा	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)
100.	श्री भेमजी	शपथ	(हिन्दी)
101.	श्री भेरूलाल	शपथ	(हिन्दी)
102.	श्री भैरू	शपथ	(हिन्दी)
103.	श्री मंजूर अली	शपथ	(उर्दू)
104.	श्री मणिराम	शपथ	(हिन्दी)
105.	श्री मथुरादास	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
106.	श्रीमती मदन कौर	शपथ	(हिन्दी)
107.	श्री मदनसिंह	शपथ	(हिन्दी)
108..	श्री मनफूलराम	शपथ	(हिन्दी)
109.	श्री मनोहरसिंह मेहता	शपथ	(हिन्दी)
110.	श्री मांगीलाल (गंगरार)	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : (श्री मांगीलाल (जायल) द्वारा पढ़ सकने में असमर्थता जाहिर करने पर) अगर कठिनाई हो तो मैं मदद कर दूं।

श्री मांगीलाल : कर दो।

श्री अध्यक्ष : शपथ लेंगे ?

श्री मांगीलाल : जी।

1	2	3	4
111.	श्री मांगीलाल	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)
112.	श्री माणकचन्द सुराणा	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
113.	श्री माणकलाल ठाकुर	शपथ	(हिन्दी)
114.	श्री माधवसिंह	शपथ	(हिन्दी)
115.	श्री माधोसिंह (रेवदर)	शपथ	(हिन्दी)
116.	श्री माधोसिंह कछवाहा (सरदारपुरा)	शपथ	(हिन्दी)
117.	श्री राजा मानसिंह	शपथ	(आंग्ल)
118.	श्री मालाराम	शपथ	(हिन्दी)
119.	श्री माव जी	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)
120.	श्री मूलचन्द डागा	शपथ	(हिन्दी)
121.	श्री मूलचन्द सामरिया	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
122.	श्री मेघराज	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : श्री ओमप्रकाश शर्मा जिनका नाम पूर्व में पुकारा गया था किन्तु वह उस समय उपस्थित नहीं थे। उनकी पत्नी सख्त बीमार हैं, उन्हें कोटा जाना है। यदि सदन की अनुमति हो तो उन्हें शपथ दिला दी जाये ?

(स्वीकृत)

अनुमति प्रदान की गयी।

123.	श्री ओमप्रकाश शर्मा	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : (श्री मोहनलाल से) आप ईश्वर को मानते हैं ?

श्री मोहनलाल : ईश्वर को मानता हूं।

124.	श्री मोहनलाल	(अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)	(हिन्दी)
125.	श्री मोहनलाल शर्मा (डूंगरगढ़)	शपथ	(हिन्दी)
126.	श्री मोहम्मद जहूर	शपथ	(हिन्दी)

Page No 10

(10)

1	2	3	4
127.	श्री रंग जी	शपथ	(हिन्दी)
128.	श्री रघुनन्दन व्यास	शपथ	(संस्कृत)
129.	श्री रघुनाथ बिश्नोई	शपथ	(हिन्दी)

(श्री रघुवीरसिंह : अनुपस्थित)

130.	श्री रणजीतसिंह	शपथ	(हिन्दी)
131.	श्री रणमलसिंह	शपथ	(हिन्दी)
132.	श्री रतनलाल वर्मा	शपथ	(हिन्दी)
133.	श्री रतनाराम	शपथ	(हिन्दी)
134.	श्री राम करणसिंह	शपथ	(हिन्दी)
135.	श्री रामकिशनदास	शपथ	(हिन्दी)
136.	श्री रामकिशोर मीणा	शपथ	(हिन्दी)
137.	श्री रामचन्द्र चौधरी	शपथ	(हिन्दी)
138.	श्री रामचन्द्र जाट	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
139.	श्री रामजीलाल	शपथ	(हिन्दी)
140.	श्री रामदेव	शपथ	(हिन्दी)
141.	श्री रामदेवसिंह	शपथ	(हिन्दी)
142.	श्री रामनारायण (बिलाड़ा)	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : (श्री रामनारायण चौधरी से) मैं मदद करूं।

एक माननीय सदस्य : मदद की जरूरत नहीं है।

143.	श्री रामनारायण चौधरी	शपथ	(हिन्दी)
144.	श्री रामप्रसाद लढ्ढा	शपथ	(हिन्दी)
145.	श्री राम रघुनाथ	शपथ	(हिन्दी)
146.	श्री रामलाल	शपथ	(हिन्दी)
147.	श्री रामसिंह बिश्नोई	शपथ	(हिन्दी)
148.	श्री रामेश्वर (चौमू)	शपथ	(हिन्दी)
149.	श्री रामेश्वर (जमवा रामगढ़)	शपथ	(हिन्दी)
150.	श्री रामेश्वरलाल चौधरी	शपथ	(हिन्दी)
151.	श्री रावतराम	शपथ	(हिन्दी)
152.	श्री लक्ष्मणसिंह	शपथ	(हिन्दी)

1	2	3	4
153.	श्री लाल चन्द	शपथ	(हिन्दी)
154.	श्री लाभशंकर	शपथ	(हिन्दी)
155.	श्री लालू	शपथ	(हिन्दी)
156.	श्री वसीलाल	शपथ	(हिन्दी)
157.	श्री विजयसिंह नदेरा	शपथ	(हिन्दी)
158.	श्री विट्ठलप्रसाद शर्मा	शपथ	(हिन्दी)

(श्री वृजेन्द्रपालसिंह द्वारा राजस्थानी में शपथ लेना शुरू करने पर)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, राजस्थानी भाषा संविधान में रिकग्नाइज्ड भाषा नहीं है, इसलिए हिन्दी में शपथ लें या अगर उचित समझें तो अंग्रेजी में लें। इस समय, मैं डिस्कशन में नहीं जाना चाहता।

श्री वृजेन्द्रपाल सिंह : मुझे बहुत दुःख है कि राजस्थान विधान सभा में राजस्थानी में शपथ नहीं ले सकते। अब जैसा आप फर्मायेंगे वैसा करूंगा।

श्री अध्यक्ष : आप हिन्दी में लें।

159.	श्री वृजेन्द्रपालसिंह	शपथ	(हिन्दी)
160.	श्री वृद्धिचन्द जैन (बड़ी सादड़ी)	शपथ	(हिन्दी)
161.	श्री वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर)	शपथ	(हिन्दी)
162.	श्री शंकरलाल	शपथ	(हिन्दी)
163.	श्री शिवकरण	शपथ	(हिन्दी)
164.	श्री शिवचरणसिंह	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
165.	श्री शिवनारायण	शपथ	(हिन्दी)
166.	श्री शिवरावसिंह	शपथ	(हिन्दी)
167.	श्री शीशराम	शपथ	(हिन्दी)
168.	श्रीमती श्याम कुमारी	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
169.	श्री श्योपतसिंह मकासर	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
	(श्री श्रवणलाल : अनुपस्थित)		
170.	श्री समरथलाल	शपथ	(हिन्दी)
171.	श्री सालिगराम (अध्यक्ष महोदय ने शपथ दिलाई)		(हिन्दी)
172.	श्री सुखलाल	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
173.	श्री सुभाषचन्द	शपथ	(हिन्दी)
174.	श्रीमती सुमित्रासिंह	शपथ	(हिन्दी)

(12)

1	2	3	4
175.	श्री सुरेश कुमार	शपथ	(हिन्दी)
176.	श्री सूरजपालसिंह	शपथ	(हिन्दी)
177.	श्री सूर्यनारायण	शपथ	(हिन्दी)
178.	श्री सूर्यप्रकाश	शपथ	(हिन्दी)
179.	श्री सोहनलाल बंसीलाल	शपथ	(हिन्दी)
180.	श्री हंसराम	शपथ	(हिन्दी)
181.	श्री हजारीमल	शपथ	(हिन्दी)
182.	श्री हनवन्तसिंह	शपथ	(हिन्दी)
183.	श्री हरचन्दसिंह	शपथ	(हिन्दी)
184.	श्री हरजीराम	शपथ	(हिन्दी)
185.	श्री हरलालसिंह खर्रा	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
186.	श्री हरसहाय	शपथ	(हिन्दी)
187.	श्री हरिकिशन	शपथ	(हिन्दी)

(श्री हरिदेव जोशी के शपथ ग्रहण करने के लिये जाने पर)

कई माननीय सदस्य ××× ·

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर !!

एक माननीय सदस्य : यह किस ऑकेजन पर ?

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्यों को सूचित करना चाहता हूं कि इस तरह से व्यवहार करना उचित नहीं है। ठीक तरह से व्यवहार करें।

श्री मूलचन्द डागा : ठीक कहा।

188.	श्री हरिदेव जोशी	शपथ	(हिन्दी)
189.	श्री हरिशकुमार शर्मा	शपथ	(हिन्दी)

(श्री हरिशकुमार शर्मा ने शपथ ग्रहण करने के बाद नारा ××× लगाया)

×××× अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार शब्द निकाले गये

13

शपथ एवं–18 जुलाई, 1977–प्रतिज्ञान

श्री अध्यक्ष : यह शपथ के आगे के जो शब्द हैं × × × इत्यादि शपथ में शामिल नहीं हैं, इन्हें एक्सपन्ज कर दिया जाय।

1	2	3	4
190.	श्री हरीसिंह (फुलेरा)	शपथ	(हिन्दी)
191.	श्री हरिसिंह यादव	प्रतिज्ञान	(हिन्दी)
192.	श्री एच.एन. शर्मा	शपथ	(हिन्दी)
193.	श्री हीरालाल	शपथ	(हिन्दी)
194.	श्री हीरालाल (मंडावर)	शपथ	(हिन्दी)
195.	श्री हीरालाल आर्य	शपथ	(हिन्दी)
196.	श्री अमृतलाल	शपथ	(हिन्दी)
197.	श्री रघुवीरसिंह	शपथ	(हिन्दी)
198.	श्री श्रवणलाल	शपथ	(हिन्दी)

श्री अध्यक्ष : कार्यक्रम में दूसरा एजेण्डा है अध्यक्ष के निर्वाचन संबंधी उसके लिए निर्धारित समय 5 बजे रखा गया है। हाउस क्या चाहता है ? मैं यह जानना चाहता हूं।

कुछ माननीय सदस्य : अभी।

एक माननीय सदस्य : आधा घंटे के लिए एडजोर्न कर दें।

श्री नवनीत पालीवाल : 5 बजे करवा दो।

एक माननीय सदस्य : घोषणा हो गयी है तो 5 बजे का ही रखना चाहिए।

श्री परसराम मदेरणा : माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसी कि मुझे सूचना दी गई थी कि समय का नोटीफिकेशन गजट में प्रकाशित हो चुका है उसमें परिवर्तन करना, मैं समझता हूं, उचित नहीं रहेगा क्योंकि कान्स्टीट्यूशनल प्रोपराइटी और उसके सम्बन्ध में एतराज फ्यूचर में खड़े हो सकते हैं, इसलिए समय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

श्री अध्यक्ष : इसलिए सदन की कार्यवाही आज ही 5.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म.प. 2.55 बजे सायं 5-00 बजे तक के लिए स्थगित की गई)

Page No 14

(14)

विधान सभा की बैठक पुनः म. प. 5.00 बजे प्रारम्भ हुई।

(श्री मेजर फतह सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

अध्यक्ष का निर्वाचन

श्री लक्ष्मण सिंह का अध्यक्ष पद पर निर्वाचन

श्री अध्यक्ष : अध्यक्ष का निर्वाचन। श्री सूर्य नारायण प्रस्ताव करेंगे।

श्री सूर्यनारायण चौधरी (नीम का थाना) : मैं प्रस्ताव करता हूं कि श्री लक्ष्मण सिंह, सदस्य विधान सभा, विभाजन संख्या 151, को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाय।

श्री अध्यक्ष : श्री नवनीत कुमार पालीवाल, सदस्य, इसका समर्थन करेंगे।

श्री नवनीत कुमार पालीवाल (नाथद्वारा) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव श्री सूर्यनारायण, सदस्य, विधान सभा, विभाजन संख्या 180 ने रखा है और जिसका समर्थन श्री नवनीत कुमार पालीवाल, सदस्य, विधान सभा, विभाजन संख्या 69 ने किया है, उसे स्वीकार किया जाए ?

(स्वीकृत)

प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

अतः मैं घोषित करता हूं कि श्री लक्ष्मण सिंह, विभाजन संख्या 151 को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया।

मैं महारावल श्री लक्ष्मण सिंह से निवेदन करूंगा कि वे यहां पधार कर अध्यक्षीय आसन को ग्रहण करें।

(सदन के नेता श्री भैरोंसिंह शेखावत व प्रतिपक्ष के नेता श्री परसराम मदेरणा ने नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री लक्ष्मण सिंह के समीप जाकर उनसे अध्यक्ष—आसन ग्रहण करने का आग्रह किया। तदुपरांत उन्हें ससम्मान अध्यक्षीय आसन ग्रहण कराया)

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले इस सदन की ओर से इस पद पर आपके चुने जाने के संबंध में बधाई देता हूं। आपका निर्वाचन हम सब के लिए आज बहुत ही खुशी का विषय है। आप पिछले 20 वर्षों से और उससे पहले भी राज्य सभा के सदस्य रहे हैं। यह कहना चाहिए, जबसे अपने देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था लागू हुई और विधान सभा, लोक सभा और राज्य सभा की प्रक्रिया चालू हुई हैं, उस समय से निरंतर किसी न किसी सदन के सदस्य रहे हैं। इस कारण यह निश्चित है कि आपको सदन की परम्पराओं का, सदन की गरिमा का और माननीय सदस्य के अधिकारों का पूर्ण ज्ञान है। इस ज्ञान के कारण हम सबको विश्वास रख कर चलना है कि आपके हाथों में इस सदन की गरिमा और माननीय सदस्यों का सम्मान और अधिकार पूर्णतः सुरक्षित रहेगा।

मुझे इस बात की खुशी है कि आपका निर्वाचन निर्विरोध रूप से हुआ है। इसके लिए मैं विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों का भी बड़ा आभारी हूं कि इस सम्माननीय पद पर आपके निर्वाचन में उन्होंने

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

इस प्रकार का सहयोग किया है । इस कारण, अध्यक्ष महोदय, आपका उत्तरदायित्व भी ज्यादा हो जाता है । मैं आशा करता हूं कि आप सदन में जिस प्रकार की परम्परायें डालेंगे, सदन के सभी माननीय सदस्य आपका सहयोग करके उन परम्पराओं का ठीक प्रकार से निर्वहन करेंगे । इस सदन में अधिकांश माननीय सदस्य ऐसे हैं जो इस बार नए आए हैं । उनको भी सदन की परम्पराओं का ज्ञान और जानकारी आपके इस पद पर बने रहने से आसानी से हो सकेगी । आप जिस प्रकार का निर्देश देंगे, जिस प्रकार का मार्ग-दर्शन आपका होगा, हम उसी के अनुरूप चलेंगे ।

मैं अपनी ओर से व अपने दल की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपके जो भी निर्देश होंगे, उनका हम सही रूप मे पालन करेंगे और सब मिलकर इस सदन के सम्मान और गरिमा को बढ़ा कर चलेंगे ताकि इस सदन की जो प्रतिष्ठा सारे देश में है, उस पर आंच न आए ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपके प्रति फिर अपना आभार प्रकट करता हूं और कामना करता हूं कि आपने इस पद पर आसीन होकर जो जिम्मेदारी ली है उसका ठीक प्रकार से आप निर्वहन करेंगे ।

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष) अध्यक्ष महोदय, छठी विधान सभा के अध्यक्ष के उच्च पद पर निर्विरोध निर्वाचन के लिए मैं अपने दल की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं ।

संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में इस सदन की गरिमा, प्रतिष्ठा व महिमा है । हमको पूरा विश्वास है कि उसको आप अक्षुण्ण रखेंगे और सदन की परम्पराओं को पूर्णत: निभायेंगे ।

अध्यक्ष महोदय, आपकी विद्वता, शालीनता व सहिष्णुता से यह सदन भलीभांति परिचित है । आपके लम्बे संसदीय और सार्वजनिक जीवन के अनुभव से सदन को लाभ होगा ।

अध्यक्ष महोदय, विरोधी पक्ष के दायित्व और कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में आपसे ज्यादा परिचित व्यक्ति और कोई माननीय सदस्य नहीं है । संभवत: मुख्य मंत्री का दूसरा दर्जा हो सकता है । हमें पूरा विश्वास है कि कर्त्तव्यों के वहन करने में आपका संरक्षण हमेशा विरोधी पक्ष को मिलेगा । हमें संरक्षण देने के साथ ही साथ आप हमारे अधिकारों और हितों की भी रक्षा करेंगे, ऐसी हम आपसे अपेक्षा करते हैं । संसदीय और लोकतान्त्रिक परम्पराओं के विकास में आपका निरन्तर सहयोग रहेगा । हम आपसे यह भी अपेक्षा करते हैं कि विरोधी पक्ष को आप सफल बनाने में मदद करेंगे जिससे लोकतन्त्र में विरोधी दल, जो दूसरा बड़ा दल होता है सत्ता पक्ष पर अंकुश लगाने का प्रयत्न कर सकेगा ।

मैं आपको मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से विश्वास दिलाता हूं कि मैं और मेरा दल इस सदन की गरिमा और परम्पराओं के अनुरूप इस सदन में कार्य करते रहेंगे । इसके साथ ही इस सदन के कार्य को नियन्त्रित ढंग से चलाने में मेरा दल आपको सहयोग प्रदान करता रहेगा ।

Page No 16

(16)

(श्री परसराम मदेरणा)

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको पुनः बधाई देते हुए मेरी ओर से व अपने कांग्रेस दल की ओर से यह आश्वासन देता हूं कि आसन के प्रति हम हमेशा सम्मान और आदर रखते रहेंगे।

श्री श्योपतसिंह मकासर (हनुमानगढ़): अध्यक्ष महोदय, मैं आपको अपने दल की ओर से आपके सर्वसम्मत अध्यक्ष चुने जाने के लिये बधाई देता हूं।

आपने राजस्थान विधान सभा में विरोधी दल के नेता के रूप में कई वर्षों तक गरिमापूर्ण और शालीनता से रोल अदा किया है वह हमने देखा है। हम लोगों को अल्प संख्यक मानते हुए आप हमारा विशेष ध्यान रखेंगे और हमारे साथ न्याय बरतेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ दुबारा मैं आपको अध्यक्ष चुने जाने के लिये बधाई देता हूं। मैं आपको अपने दल की ओर से यह विश्वास दिलाता हूं कि मेरा दल इस सदन की गरिमा और परम्पराओं को बनाये रखने में आपको सदैव सहयोग देता रहेगा।

श्री प्रद्युम्नसिंह (राजाखेड़ा): अध्यक्ष महोदय, हम चार निर्दलीय सदस्य इस सदन में चुन कर आये हैं। कल ही हम हमारा एक नया दल बनाकर आपको सूचित कर देंगे। अध्यक्ष महोदय, हम चारों सदस्य आपके सर्वसम्मत अध्यक्ष चुने जाने के लिये आपको बधाई देते हैं। हम आपको सदन की कार्यवाही में निरन्तर सहयोग देंगे। इसके साथ ही मैं आपसे यह निवेदन करूंगा कि आप निर्दलीय सदस्यों का विशेष ध्यान रखें।

श्री नूरा (मसूदा): अध्यक्ष महोदय, मैं आपके इस महत्वपूर्ण पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने पर अपने दल की ओर से आपको बधाई प्रस्तुत करता हूं। इस सदन में स्वीकृत विरोधी पक्ष अर्थात् कांग्रेस दल के अलावा विरोधी पक्ष में अन्य दल भी हैं। मेरा दल इस प्रकार की स्थिति में है कि इस दल का चुना हुआ मैं एक ही प्रतिनिधि हूं। इसलिये हमारा अपना एक विशेष नजरिया है। मुझे आशा है कि आप इस दल के हितों को भी ध्यान में रखेंगे और जन हितों के प्रश्नों पर एक विरोधी पक्ष के नाते अपनी बात कहने का मुझे पूरा मौका देंगे।

श्री अध्यक्ष: सम्माननीय सदस्य महानुभावो! आपने जो महती कृपा करके मुझे निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया है, उसके लिये मैं आप सभी का अत्यधिक आभारी हूं। मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं कि जिनके द्वारा मैं मेरे हृदय के उद्गारों को आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकूं।

आपने मुझे सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुन कर न केवल मुझे गौरव प्रदान किया है बल्कि उसके साथ साथ आपने इस महान सदन की परम्पराओं को गौरवान्वित भी किया है, उसके लिये आप सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत करता हूं। इस सदन में आपमें से जो सदस्य तो ऐसे हैं जो सभी चुनावों में सफल होकर चुन कर आते रहे हैं। कुछ एक सदस्य ऐसे हैं जो कि दो बार सफल होकर इस सदन में आये हैं, कुछ माननीय सदस्य ऐसे हैं जो तीन बार

(श्री अध्यक्ष)

चुन कर आये हैं, कुछ ऐसे भी सदस्य हैं जो चार बार भी चुनकर आने वाले हैं। मेरा अनुरोध उन सभी सम्माननीय सदस्यों से है कि वे अपने अनुभवों के द्वारा इस सदन के समक्ष संसदीय जनतन्त्र की स्वस्थ परम्पराओं को प्रस्तुत करें और अपने अनुभवों के द्वारा नव निर्वाचित सम्माननीय सदस्यों का संसदीय जनतन्त्र को सफल बनाने में सफल मार्ग-दर्शन भी करें। गणतन्त्र के कोमल फूल को यदि उभय पक्ष के द्वारा सफलतापूर्वक संवारा जाय, उसे ठीक तरह से सिंचित किया जाय तो उसके पौधे और उसके फूल को और भी सुगन्धमय बनाया जा सकता है। उस फूल की सुगन्ध देश और हमारे समाज दोनों को प्राप्त होती है। किन्तु उस जनतंत्र रूपी कोमल फूल पर यदि कोई ज्यादा प्रहार किया जाये तो वह तुरन्त ही कुम्हला जाता है।

मैं सभी सम्माननीय सदस्यों को अपनी ओर से विश्वास दिलाना चाहूंगा कि मेरा यथा सम्भव यह निरन्तर प्रयास रहेगा कि सदन की गरिमा कायम रहे और सदन की गरिमा में अभिवृद्धि हो। मैं माननीय सदस्यों को यह भी विश्वास दिलाना चाहूंगा कि सभी सम्माननीय सदस्यों के अधिकारों का संरक्षण करने का मेरा निरन्तर प्रयास होगा तथा इस महान सदन की गरिमा और इस सदन की स्वस्थ परम्पराओं को कायम रखना मेरा परम, पावन और पुनीत कर्तव्य होगा। मैं सभी सम्माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा और विनम्रतापूर्वक यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि वह मुझे अपना सहयोग प्रदान करें ताकि आसन अपना काम इस सदन में गौरवपूर्ण ढंग से कर सके तथ इस सदन की गरिमा में अभिवृद्धि हो।

आज का दिन सभी सम्माननीय सदस्यों के लिये, मैं समझता हूं एक ऐतिहासिक महत्व का दिन है। आज के दिन तीस वर्ष के पश्चात् जो शासनारूढ़ दल था उसे मैं आज विपक्ष में पा रहा हूं और जो सदस्य गत तीस वर्षों से विपक्ष में बैठते थे, उन्हें आज सरकारी पक्ष में ट्रेजरी बैन्चेज पर बैठे देख रहा हूं। यह जनतन्त्र का चमत्कार है।

मैं सम्माननीय सदस्यों को यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि उभय पक्ष को चाहिये कि सदन में स्वस्थ वातावरण बनाये रखें। शालीनता से आलोचना करें ताकि जनतन्त्र की स्वस्थ परम्परायें स्थापित हों। सदन में निराधार आरोप, कैरेक्टर असेसिनेशन आदि बातों से यथासम्भव परहेज करें। Essence of democracy is compromise. यह आप सब जानते हैं। सारांश जनतंत्र का यही है कि विवाद हो, उसमें कटुता नहीं आवे। उसके पश्चात् जो कुछ भी निर्णय हो, विवाद और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण के द्वारा अगर कोई निष्कर्ष निकले तो उसकी क्रियान्विति करना सरल व सुगम हो और इस सदन की गरिमा में अभिवृद्धि लाने वाला हो।

15 वर्ष से मैं विरोधी पक्ष का एक सदस्य रहा हूं। विरोधी पक्ष ने उत्तरदायित्व के साथ इस सदन की गरिमा और महिमा का संरक्षण किया है। उनकी तरफ से जो आलोचना हुई है वह भी रचनात्मक और शालीनता के साथ हुई है। मैं आशा करता हूं कि यही परम्परायें विरोधी पक्ष

18

(श्री अध्यक्ष)

भी निभायेगा तथा उसमें अभिवृद्धि करेगा।

यह देश का सौभाग्य है और भारत-वर्ष की जनता बधाई की पात्र है कि आज हम इस देश के अन्दर जनतंत्र को पुनः स्थापित कर पाये हैं। यह सदन उस महत्व-पूर्ण और बहुमूल्य लोकतन्त्र का प्रतीक है।

मैं आप सब सम्माननीय सदस्यों का पुनः अभिवादन करता हूं, बधाई प्रस्तुत करता हूं और आशा करता हूं कि आपकी तरफ से जो भी सुझाव आयेंगे वह ठोस, रचनात्मक और ऐसे होंगे कि जिनके द्वारा इस सदन की गरिमा और महिमा में अभि-वृद्धि होगी तथा जनतंत्र की स्वस्थ परम्परायें संस्थापित हो पायेंगी।

धन्यवाद, !

अब सदन की कार्यवाही कल मंगलवार प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही सायं 6.24 बजे मंगलवार दिनांक 19 जुलाई, 1977 के म. पू. 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)